International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(2): 98-99

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(2): 98-98
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 12-01-2020
Accepted: 16-02-2020

दीपक शर्मा
शोधच्छात्र, संस्कृत विभाग,
पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ, भारत

Corresponding Author:
दीपक शर्मा
शोधच्छात्र, संस्कृत विभाग,
पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ, भारत

गुरु विरजानन्द की प्रयाण यात्रा

दीपक शर्मा

गुरु विरजानन्द आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द के गुरु थे। उनका जीवन कठिन परिस्थितियों में संघर्षमय था। बचपन में ही माता–पिता की मृत्यु के बाद और भाभी के द्वारा किये गए दुर्व्यवहार के कारण[1] गुरु विरजानन्द चौदह वर्ष की अवस्था में घर से निकल पड़े। उसे दुःखी मन से दृढ़ संकल्प किया।[2] ये ईश्वर के भक्त, ईश्वर को साक्षी करके ईश्वर को याद कर महा प्रयाण किया।[3] उन्होंने नगर–नगर, ग्राम–ग्राम यात्रा की और भिक्षावृत्ति करते हुए नित्य आगे बढ़े। ये प्रातः से लेकर साँयकाल तक एक गाँव से दूसरे गांव में चले जाते थे। कहीं समतल भूमि मिलती तो कहीं जंगल मिलते थे। उस समय वन में हिंसक पशु आश्रय लेते थे। रात–दिन वहाँ मानव जीवन कठिन था। विरजानन्द कभी भी उस भयानक वन में बिल्कुल भी भयभीत नहीं होते थे। यद्यपि कहीं पर सुन्दर मार्ग और वहीं इधर–उधर सुन्दर भूखण्ड थे जो सुगन्धी से युक्त पुष्प और पौधों से शोभित थे।[4] वे यात्रा से उत्पन्न भारी कष्ट को सहने करते हुए जाते थे। इस प्रकार चलते हुए रात्रि में जालन्धर पहुँचे और वहीं रात्रि वास किया।[5] अगले दिन यत्र–तत्र मार्ग में आराम करते हुए और लोगों से रास्ता पूछते हुए फिल्लौर की तरफ चले।[6] बहुत सारे ग्रामों में घूमते हुए और रास्ते में लोगों से मिलते हुए फगवाड़ा को पार करते हुए लुधियाना पहुँचे।[7] यहाँ सुन्दर प्रदेश पंजाब में लुधियाना एक महानगर है।
यहाँ ऊन के वस्त्र बनते हैं और इसे कम्बलों की नगरी भी कहा जाता है। अगले दिन वे दयालु ब्रजलाल (बचपन का नाम) ब्रह्म मुहूर्त में उठकर एक गांव से दूसरे गांव होते दोराहा पहुँचे और वहाँ निवास किया और शाम तक सुन्दर रखना ग्राम में पहुंचे वहाँ एक मुख्य मार्ग पर श्रेष्ठ यात्रिशाला थी, जिसे पहले सराय कहते थे और अगले दिन गोविन्दगढ़ मण्डी पहुँचे जो उस समय महामहिमशाली धनी सेठों की बस्ती थी और इसके बाद गुरु गोविन्द के दो पुत्रों के बलिदान के कारण प्रसिद्ध सरहिन्द पहुँचे और वहाँ अष्टांगों सहित गुरुद्वारे में गुरु को प्रणाम किया। इस प्रकार ब्रजलाल ने स्वयं को भगवान को समर्पित कर दिया कहा भी है?

> कृत पृथ्वीतले वासमयं सुसरलः जनः।
> प्रभुपदावज शोभनं समर्पितं सजीवनम्।।[8]

उन्हें उस समय जो मिल रहा था वो भगवान की कृपा थी। क्योंकि शीतला माता के प्रकोप के कारण बचपन में ही अन्धे हो गये थे जिसके कारण बहुत की कष्ट झेलना पड़ा। इसके बाद वह ब्रजलाल सरहिन्द से राजपुरा जो नहरों के कारण एक सुन्दर नगरी है।[9] राजपुरा से अंबाला जो वर्तमान में हरियाणा प्रदेश के उत्तर दिशा में स्थित जो भारत में प्रसिद्ध है। इसके पश्चात अंबाला से मुलाना, बराडा, मुस्तकबाद, जगाधरी पहुँचे और यहाँ से यमुना नदी, पेड़–पौधों, फल, फलों युक्त जहाँ की धरती सदा हरियाली से भरपूर रहती है अंबाला मण्डल की अपनगरी यमुनानगर पहुँचे और निवास किया।
यमुनानगर के पास यमुना नदी है। वह वीर उस नदी को पार करके सहारनपुर गये। उस समय यह नगर विशेष कर मुस्लिमों की नगरी थी और सहारनपुर की विशेषता बताते हुए कहा है–

> वृक्षानामत्र बाहुल्यं नद्यः वहन्ति सर्वदा।
> रसालानां कृते ख्यातं स्थानमिदं हि विद्यते।।[10]

ये धर्म के ज्ञाता यहाँ रूक कर अलगे दिन वन को चल पड़े। फिर वह रास्ते मे विहट ग्राम होते हुए छुट्टमलपुर पहुँचे। वहाँ से सुन्दर नगर देहरादून गये और कुछ समय वहाँ निवास किया। फिर

सहस्रधार स्थल होकर वे आगे चले और अपने लक्ष्य ऋषिकेश को साहस के साथ प्राप्त किया। ढाई वर्ष चलकर ऋषिकेश पहुँचे।

सार्धवर्षद्वयं गच्छन्तत्हृषीकेशमाप्तवान्।
तस्मिकाले सुतीर्थं तत् प्रसिद्धमस्ति भारते।।[11]

ऋषिकेश उस समय भी और आधुनिक युग में भी पवित्र एवं सुन्दर तीर्थ स्थान है। जो गंगा नदी के किनारे सदा वृक्षों से आच्छादित तपो भूमि है। यहीं गंगानदी के किनारे एकत्र पवित्र स्थान पर पत्तों की कुटिया बनाई और वह दण्डी इच्छानुसार कन्दमूल और फल खाता था इस कारण से उसका स्वास्थ्य अच्छी प्रकार से सुडौल था। वे ब्रह्म मुहुर्त में जागकर गंगा के किनारे पर स्नान करके और वहीं कुटिया में रहकर नित्य गायत्री का जाप किया। फिर प्रज्ञा चक्षु को गायत्री जप के समय गंगा के किनारे पर गांव के लोगों ने अच्छी प्रकार देखा और उनका गुणगान किया। गांव के लोग उनका अब प्रकारसे हित चाहते थे। उस समय वह दण्डी स्वामी के रूप में अच्छी प्रकार से प्रसिद्ध हो चुके थे और ऋषिकेश के रम्य स्थल पर बहुत समय व्यतीत किया। ततः पश्चात् विरजानन्द को एक स्वप्न के माध्यम से ऋषिकेश से प्रमाण का आदेश मिला–

भो स्वामिन् गच्छत्वं, ह्यस्मात् स्थानात् क्वचिदन्यत्र पुरे।
सदुपदेशं च कर्तुं लब्धा सिद्धिस्त्वयानूनम्।।[12]

इस प्रकार स्वामीं ने ऋषिकेश को छोड़ने और अच्छा स्थान प्राप्त करने का विचार किया और उन्होंने कनखल जाने का विचार किया। ऋषिकेश से कनखल स्थान दूर नहीं था। लेकिन यह रास्ता कठोर था। क्योंकि वहाँ रास्ते में गहरा जंगल था। उसने गंगा नदी के किनारे प्रतिदिन उस समय यात्रा की। प्रसन्न मन से विश्वनाथ का ध्यान करते हुए एक गांव से दूसरे गाँव जाकर और शाम को रास्ते में कहीं रूककर वहीं भोजन करके कथा सुनाते थे। लोग विरजानन्द की बातों को सुनकर उनका आदर करते थे। उन्हे गुरु मानकर उनकी पूजा करते थे। इस प्रकार उस समय दृढ़ इच्छा से नियमित रूप से यात्रा करके बार–बार अपने मन में लक्ष्य प्राप्त करने में लगे रहे और कनखन नगरी में ही उनकी भेंट स्वामी पूर्णानन्द जी से होती है और उनको अपना गुरु मानने लगते हैं।[13]
गुरु विरजानन्द ने कनखल नगरी में ही रहकर शास्त्र पढ़े और व्याकरण शास्त्र में प्रसिद्धि प्राप्त की। वही सुन्दर कनखल नगरी में पाठशाला थी जिसे स्वामी जी ने शुभ संस्कृत शिक्षा के लिए संचालित किया था। ततः पश्चात कनखल से काशी नगरी, गया तीर्थ, सोरोतीर्थ गये और वहाँ गडिया घाट पर प्रसन्न होकर रहने लगे और काफी समय तक निवास किया। इसके बाद अलवर के राजा द्वारा अपने राज्य में बुलाने पर स्वामी जी अलवर में रहने लगे और लोगों को उपदेश देते थे। अलवर से मथुरा पहुँचे और मथुरा में विरजानन्द जी ने बहुत समय व्यतीत किया और आर्ष ग्रन्थों का प्रचार हुआ। मथुरा में रहते हुए अनेक रोगों ने इन्हें घेर लिया और फिर मथुरादास के द्वारा की गई सेवा से रोग मुक्त हुए।

सेवकः मथुरादासः शिष्य यः दण्डिनं च सेवते।
तस्य तु कृपया स्वामी रोगान्युक्तो हि सर्वतः।।[14]

फिर मथुरा में कुटिया एकान्त में बनाई और मुनि ने वहाँ एक पाठशाला का निर्माण किया और दिन रात निःशुल्क शिक्षा दी जाती थी। मथुरा नगरी में ही स्वामी जी के शास्त्रार्थ का वर्णन प्राप्त होता है। यही मथुरा की पवित्र भूमि पर गुरु विरजानन्द जी ने अपनी अन्तिम सांस ली।

संदर्भ ग्रन्थ

1. गुरुगौरवीय महाकाव्य– 4.29
2. वही– 5.1
3. वही– 5.2
4. वहीं– 5.13
5. वही– 5.14
6. वही– 5.17
7. वही– 5.18
8. वही – 5.32
9. वही– 5.50
10. वही– 5.51
11. वही– 5.55
12. वही–6.20
13. वही– 7.5
14. वही– 8.6